Bahubali Bhagwan Ki Aarti PDF

बाहुबली भगवान की आरती: वर्णन १

जयति जय जय गोम्मटेश्वर, जयति जय बाहुबली ।
जयति जय भरताधिपति, विजयी अनुपम भुजबली ।

श्री आदिनाथ युगादिब्रह्मा त्रिजगपति विख्यात हैं ।
गुणमणि विभूषित आदिनाथ के भारत और बाहुबली ॥
जयति जय ००

वृषभेश जब तप वन चले तब न्याय नीति कर गए ।
साकेतनगरीपति भरत, पोदनपुरी बाहुबली ॥
जयति जय००

षटखंड जीता भरत मन की नहीं आशा बुझी ।
निज चक्ररत्न चला दिया फिर भी विजयी बाहुबली ॥
जयति जय००

सब आखिर राज्य विभव तजा, कैलाश पर जा बसे ।
इक वर्ष का ले योग तब, निश्चल हुए बाहुबली ॥
जयति जय००

तन से प्रभु निर्मम हुए वन जंतु क्रीडा कर रहे ।
सिद्धि रमा वरने चले प्रभु वीर बन बाहुबलि॥
जयति जय००

प्रभु बाहुबली की नग्न मुद्रा सीख यह सिखला रही ।
सब त्याग करके माधुरी तुम भी बनो बाहुबली ॥
जयति जय००

बाहुबली की आरती: वर्णन २

चंदा तू ला रे चंदनिया, सूरज तू ला रे किरणाँ ... (२)
तारा सू जड़ी रे थारी आरती रे बाबा नैना सँवारूँ ...(२)
थारी आरती ... चंदा तू...॥

आदिनाथ का लाड़लाजी नंदा माँ का जाया ...(२)
राजपाट ने ठोकर मारी, छोड़ी सारी माया ... (२)
बन ग्या अहिंसाधारी, बाहुबली अवतारी
तारा सू जड़ी रे थारी आरती, रे बाबा नैना सँवारूँ ... चंदा तू..॥

तन पे बेला चढ़ी नाथ के, केश घोंसला बन गया ...(२)
अडिग हिमालय ठाड्या तनके, टीला-टीला चमक्या ...(२)
थारी तपस्या भारी, तनमन सब थापे वारी
ताराँ सू जड़ी रे थारी आरती, रे बाबा नैना सँवारूँ ... चंदा तू..॥

जय-जय जयकारा गावें थारा, सारा ये संसारी ...(२)
मुक्ति को मार्ग बतलायो, घंण-घंण ए अवतारी ...(२)
'नेमजी' चरणों में आयो, चरणाँ में शीश झुकायो

जुग-जुग उतारे थारी आरती रे, रे बाबा नैना सँवारूँ।